2

मनुष्य के मित्र

धरती पर मनुष्य की उत्पत्ति से ही मानवीय जीवन में पौधों और पशुओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कई पीढ़ियों से इन्सान पौधों और पशुओं को भोजन सहायक उपकरण और यहां तक एक साथी के रूप में उपयोग करता रहा है। और अगर ऐसा न होता तो शायद हमारा समाज यहां तक आज न पहुंच पाता। हमारी पारिस्थितिकी में सभी पशुओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। ये सभी पौधे और पशु न केवल एक साथ रहते हैं बल्कि संतुलन भी स्थापित करते हैं। पाषाण युग से ही पशुओं ने मनुष्य की खेतों की जुताई और सामान के परिवहन में सहायता की है। मानवीय जीवन में पशुओं का योगदान पौधों से कहीं ज्यादा है। ये हमें भोजन, कपड़ा, दवा तो देते ही हैं साथ ही हमारी आर्थिक क्रियाओं में भी योगदान देते हैं। इस पाठ में हम पशुओं के हमारे जीवन में योगदान तथा उनके महत्व के बारे में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप –

- हमारे आस-पास के पशुओं को पहचान कर वर्गीकृत कर सकेंगे;
- इन पशुओं की विशेषताओं की सूची बना सकेंगे;

- हमारे जीवन में इन पशुओं की भूमिका बता सकेंगे;
- प्राचीन साहित्य में पशुओं की भूमिका के उल्लेख की व्याख्या कर सकेंगे; और
- पशुओं की देखभाल के उपाय अपना सकेंगे।

2.1 पशुओं का वर्गीकरण

हम अपने चारों ओर अलग-अलग प्रकार के पशुओं को देखते हैं। कुछ पशु बड़े तो कुछ छोटे हैं। पशु अलग आकृति, आकार और स्वभाव के हो सकते हैं फिर भी वे हमारे लिए उपयोगी हैं। ये पशु सांस लेते हैं, और इनके आकार में भी बढ़ोत्तरी होती है। भोजन और आश्रय की खोज में ये एक स्थान से दूसरे स्थान को भी जाते हैं। ये अपनी संख्या में वृद्धि अंडे देकर या छोटे आकार में बच्चे जन्म देकर करते हैं। पशुओं को इन श्रेणियों में बांटा गया है।

पालतू पशु – यह पशु मनोरंजन के लिए पाले जाते हैं। जो पशु घर के अंदर पाले जाते हैं उन्हें पालतू पशु कहते हैं।

चित्र 2.1 पालतू पशु

घरेलू पशु – कुछ पशुओं को खेतों में रखा गया है। इन्हें घरेलू पशु कहा जाता है। यह हमें कई उपयोगी वस्तुएं देते हैं। हमें घरेलू पशुओं की उचित देखभाल करनी चाहिए।

चित्र 2.2 घरेलू पशु

जंगली पशु – कुछ पशु जंगल में खुले में घूमते हैं। इन्हें पाला नहीं जा सकता। ये जंगली पशु कहलाते हैं।

चित्र 2.2 जंगली पशु

दुधारू पशु – जो पशु दूध देते हैं उन्हें दुधारू पशु कहते हैं।

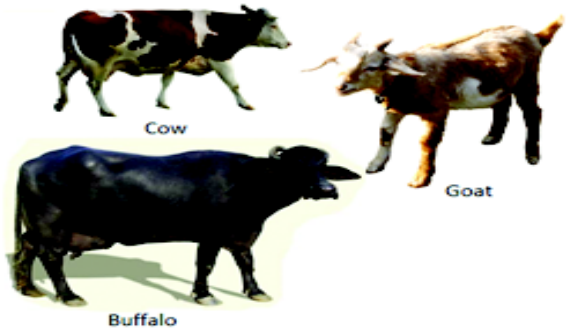

चित्र 2.4 दुधारू पशु

स्तनपायी – हाथी, बंदर, हिरण, भालू, घोड़ा, बकरी, गाय, मनुष्य जैसे जीवन स्तनपायी कहलाते हैं। स्तनपायी अपने शिशुओं को जन्म देते हैं और उन्हें अपना दूध पिलाते हैं। चमगादड़ एक उड़ने वाला स्तनपायी है जबकि व्हेल पानी में रहने वाला स्तनपायी है।

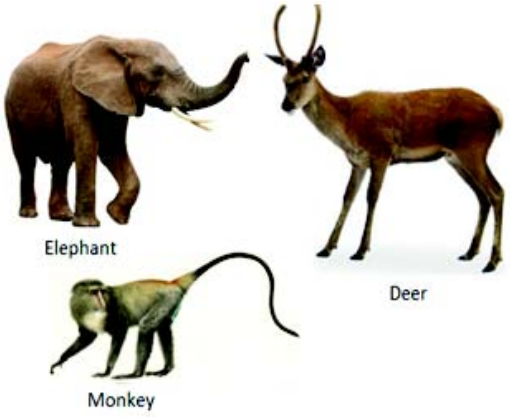

चित्र 2.5 स्तनपायी

उभयचर – पानी और भूमि दोनों में ही रहने वाले जानवरों को उभयचर कहते हैं। कछुआ, मेंढक, मगरमच्छ आदि उभयचर हैं।

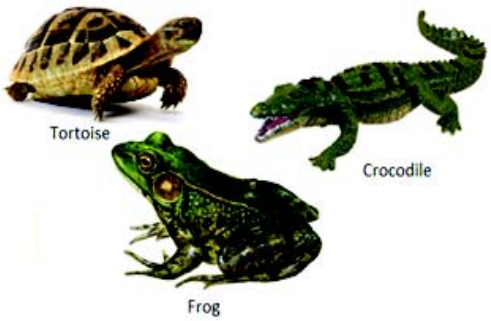

चित्र 2.6 उभयाचर

पक्षी – उड़ने वाले जानवरों को पछी कहते हैं। उनके दो पैर और दो पंख होते हैं, जो उड़ने में उनकी सहायता करते हैं। उनके शरीर में और एक पूंछ होती है।

ये सामान्यत: पेड़ों में रहते हैं। गौरेया, उल्लू, कौआ, कबूतर, किवी आदि पछी हैं। अधिकतर पछी उड़ सकते हैं जबकि कुछ तैरते भी हैं।

चित्र 2.7 (क) पक्षी

चित्र 2.7 (ख) पक्षी

सरीसृप – सतह पर रेंगकर चलने वाले जानवरों को सरीसृप कहते हैं। छिपकली, गिरगिट, सांप आदि इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

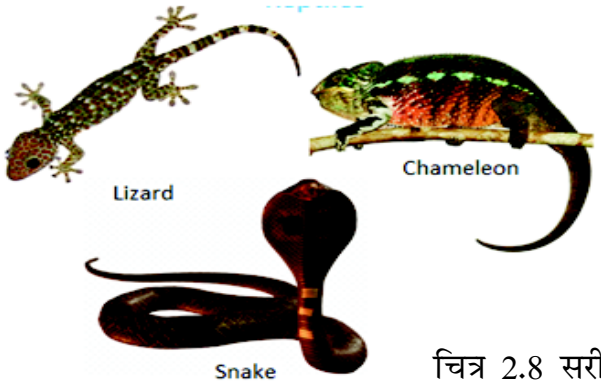

चित्र 2.8 सरीसृप

कृंतक–चूहा, खरगोश जैसे नुकीले दांत और छोटे आकार वाले जीव कृंतक कहलाते हैं।

चित्र 2.9 कृंतक

कीड़े – कीड़े छोटे जानवर हैं जिन्हें हम अपने आस–पास देखते हैं। मधुमक्खी, चींटी, तितली, पतंगे, मक्खी और तिलचट्टे आदि कीड़ों के उदाहरण हैं। इनका शरीर तीन भागों में बंटा हुआ होता है। इनके पैर होते हैं। अधिकांश कीड़ों के पंख होते हैं जो उड़ने में इनकी मदद करते हैं।

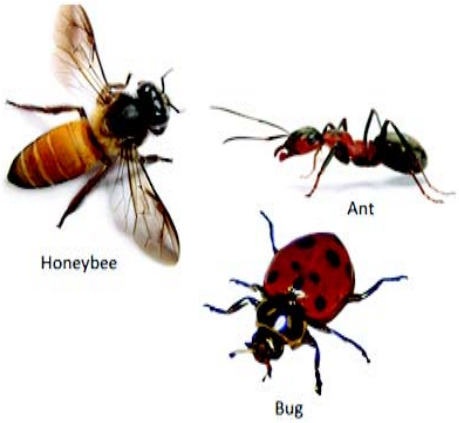

चित्र 2.10 कीड़े

2.2 मनुष्य के लिए उपयोगी पशु

आइए, अब हम अपने चारों ओर पाए जाने वाले कुछ उपयोगी पशुओं के बारे में जानें।

गाय – गाय मनुष्य के लिए बहुत ही उपयोगी पशु है। इनसे हमें दूध मिलता है जिससे कई अन्य पदार्थ जैसे–घी, मलाई, मक्खन, दही आदि बनाए जाते हैं। गाय से मिलने वाले गोबर का खाद के रूप में प्रयोग किया जाता है जो कि पौधों की वृद्धि में सहायक होता है।

घोड़ा – मनुष्य सदियों सो घोड़ों का उपयोग अलग–अलग कामों में करता आ रहा है। ये परिवहन के साधन के रूप में प्रयोग किए जा रहे हैं। इन्होंने भारी सामान को खींचने और गाड़ी को ले जाने में भी इन्सानों की मदद की। इसके अलावा घोड़े खेती के काम, जुताई, घुड़सवारी, घुड़दौड़ और प्रतियोगिताओं में भी सहायक होते हैं।

कुत्ता – कुत्ता न केवल दुनिया का सबसे प्रसिद्ध पालतू पशु है बल्कि यह मनुष्य के लिए सबसे ज्यादा उपयोगी जानवर भी है। कुत्ते अपने मित्रतापूर्ण व्यवहार के कारण मनुष्य को गहरे अवसाद से भी बाहर लाने में सहायक हुए हैं। कुत्ते अपने राडार जैसे घूमते कानों के कारण एक सेकेंड में 6/100 हिस्से को भी पहचानने में सक्षम है।

भेड़ – पालतू बनाए गए पशुओं में से भेड़ सबसे ज्यादा बहुमुखी जानवर है। भेड़ अपने ऊन के लिए प्रसिद्ध है। जिसका कई प्रकार के कपड़ों के लिए प्रयोग किया जाता है।

गधा – गधा मनुष्य द्वारा सबसे ज्यादा उपयोग किए जाने वाले पशुओं में से एक है। गधे इन्सान को कई प्रकार के खतरों का संकेत देने में सक्षम हैं। पहाड़ों में गधों का उपयोग इन्सानों तथा माल को ले जाने में होता है। साथ ही खेती के कामों में इनका उपयोग बहुत ही सस्ती दर पर होता है।

सुअर – गंदगी की साफ सफाई के लिए सुअर सबसे अधिक उपयोगी होते हैं। अक्सर अतिरिक्त फसल और बचा हुआ खाना जो हम नहीं खा पाते ये खा जाते हैं। इनका पालन व्यक्तिगत और व्यवसायिक दोनों स्तरों पर किया जाता है।

हाथी – हाथी पृथ्वी पर पाए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण जीवों में से एक है। इनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान अपनी पारिस्थितिकी में जैव विविधता बनाए रखना है। मनुष्यों द्वारा इनका उपयोग यात्रा और बोझा ढोने में किया जाता रहा है। इनके महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद हाथी दांत की तस्करी तथा इनके आवास के खत्म होने के कारण ये आज खतरे में हैं।

ऊंट – ऊंट भी पालतू बनाये गए जानवरों में से सबसे ज्यादा प्रयोग किये गये पशुओं में से एक है। ये एक सप्ताह तक बिना कुछ खाए और पिए रह सकते हैं। ऊंट भारी बोझ को भी एक दिन में 300 कि.मी. तक लेकर जा सकते हैं। ऊंट दिशाओं को पहचानने में हमारी मदद कर रेगिस्तान में भटके बिना मंजिल तक हमें पहुंचाने में सहायता करते हैं। ऊंट का मल भी उपयोगी है जो कि खाद और ईंधन के रूप में उपयोग किया जाता है। ऊंट का दूध लौह तत्व, खनिजों और विटामिन से भरपूर होता है। वसा की कम मात्रा के कारण कई बार यह गाय के दूध से भी ज्यादा स्वास्थ्यप्रद माना जाता है।

बकरी – बकरी का दूध आसानी से पच जाता है। यह बच्चों तथा गाय का दूध न पचा सकने वाले लोगों के लिए एक अच्छा विकल्प है। कैशमियर बकरी से बहुत अच्छी गुणवत्ता के रेशे मिलते हैं जो कि दुनिया से सबसे अच्छे ऊन में से एक है। मनुष्य इसके चमड़े का प्रयोग जूते, दस्ताने तथा अन्य कई उत्पादों को बनाने में करता है।

पाठगत प्रश्न 2.1

रिक्त स्थान भरिए–

1. सभी पौधे और पशु न केवल एक साथ रहते हैं बल्कि ..... भी स्थापित करते हैं।
2. जो पशु घर के अंदर पाले जाते हैं उन्हें ..... पशु कहते हैं।
3. जो पशु दूध देते हैं उन्हें ..... पशु कहते हैं।
4. पहाड़ों में ..... का उपयोग इन्सानों तथा माल को ले जाने में होता है।
5. ऊंट का ..... खाद और ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाता है।

2.3 वैदिक साहित्य में पशुओं की भूमिका

वैदिक साहित्य में वर्णित देवी-देवता पशुओं और पछियों पर सवारी करते हुए तीव्र गति से यात्रा करते हैं। अलग-अलग देवताओं के अलग-अलग वाहन हैं। 'वाहन' का शाब्दिक अर्थ 'जो भार उठाए' या 'जो खींचे' होता है।

सूर्य-घोड़ा

सूर्य देव सात घोड़ों से खींचे जाने वाले सोने के रथ की सवारी करते हैं।

अग्नि-मेष (भेड़)

अग्नि देव एक मेष (भेड़) की सवारी करते हैं।

ब्रह्मा-हंस

सृष्टि के उत्पत्तिकर्ता ब्रह्मा हंस की सवारी कर, वेद मंत्रों का उच्चारण करते हुए सारे संसार का भ्रमण करते हैं।

दुर्गा-सिंह

देवी दुर्गा सिंह की सवारी करती है। सिंह की सवारी इस बात की भी प्रतीक है कि उन्होंने लालच, लालसा और भूख जैसी भावनाओं पर काबू पा लिया है।

गणेश-मूषक (चूहा)

गणेश जी द्वारा चूहे की सवारी अवांछित इच्छाओं तथा आध्यात्मिक अंधकार पर विजय तथा गौरव को प्रदर्शित करती है।

कार्तिकेय-मोर

युद्ध के देवता कार्तिकेय को चित्रों में एक भव्य मोर की सवारी करते हुए देखा जा सकता है।

लक्ष्मी–उल्लू

भाग्य, संपदा और संपन्नता की देवी लक्ष्मी बुद्धिमान सफेद उल्लू की सवारी करती है।

सरस्वती–हंस

ज्ञान, विवेक, अध्ययन, संगीत व कला की देवी – सरस्वती के साथ हंस देखा जा सकता है।

शिव–बैल

संहार के देवता–शिव नंदी नामक बैल की सवारी करते हैं। एक शक्तिशाली पशु के रूप में बैल पौरुष का प्रतीक है।

विष्णु–गरुड़

विष्णु जो कि पालक व संरक्षक हैं वो बाज जैसे एक जीव–गरुड़ की सवारी करते हैं।

यम–भैंसा

मृत्यु के देवता यम काले भैंसे की सवारी करते हैं।

अयप्पा–बाघ

भगवान अयप्पा, भगवान शिव के पुत्र हैं। भारत का राष्ट्रीय पशु बाघ भगवान अयप्पा का वाहन है।

यह तो बस कुछ भारतीय देवी–देवताओं और उनके प्रिय पशुओं के उदाहरण हैं। पवन देव घोड़े की सवारी करते है। वरुण देव लहरों पर मगरमच्छ की सवारी करते हैं। देवी यमुना कछुए पर सवार हैं, वहीं भगवान शिव के एक रूप–भैरव एक कुत्ते को अपना वाहन बनाते हैं। और यह सूची लगभग अनंत है। देवताओं, मनुष्यों और उनके प्रिय पशुओं से जुडीं कई प्रसिद्ध कहानियां हैं। उनमें से कुछ कहानियां यहां दी गई हैं।

1. युधिष्ठिर और श्वान

महाभारत युद्ध की समाप्ति के पश्चात् पांडव हिमालय के लिए निकलते हैं तो उनके साथ एक श्वान (कुत्ता) भी चल पड़ता है। वे हिमालय पर्वत की चढ़ाई शुरु करते हैं। सबसे पहले द्रौपदी फिर धीरे-धीरे सभी पांडव मूर्छित होकर गिरते जाते हैं और उनकी मृत्यु हो जाती है। अंत में पांडवों में सबसे बड़े युधिष्ठिर ही केवल उस कुत्ते के साथ बचते हैं। तभी अचानक एक दिन इंद्र अपने रथ पर सवार होकर युधिष्ठिर के सामने प्रकट होते हैं। इंद्र चाहते थे कि युधिष्ठिर मानव शरीर में ही उनके साथ स्वर्ग चलें क्योंकि पांडवों में वही सबसे पवित्र थे। युधिष्ठिर ही थे जो धर्म के मार्ग से कभी अलग नहीं हुए।

युधिष्ठिर अपने भाइयों तथा द्रौपदी के बिना उस रथ में बैठने से मना कर देते हैं। इंद्र उन्हें भरोसा दिलाते हैं कि वे अपने भाई और द्रौपदी से स्वर्ग में मिल सकते हैं क्योंकि वे पहले ही वहां पहुंच चुके हैं। तब युधिष्ठिर रथ पर कुत्ते को ले जाने के लिए कहते हैं। इंद्र मना कर देते हैं। इंद्र कहते हैं कि हम भूमि पर बैठकर भोजन करते हैं और वहां इस पशु का इस प्रकार खुला घूमना सही नहीं होगा। उन्होंने ये भी कहा कि स्वर्ग में एक कुत्ते की उपस्थिति उसे अपवित्र कर देगी। लेकिन युधिष्ठिर अपने निर्णय पर अडिग रहते हैं। उनके लिए यह कुत्ता एक निष्ठावान भक्त था जो कि भाइयों व द्रौपदी की मृत्यु के समय भी उनके साथ रहा। वह नितांत एकांत के क्षणों में भी युधिष्ठिर के प्रति प्रेम भाव व निष्ठा रखने वाला रहा। इसलिए अंत में युधिष्ठिर इंद्र के साथ स्वर्ग जाने के स्थान पर कुत्ते के साथ ही रहने का निर्णय लेते हैं। लेकिन वह कुत्ता और कोई नहीं बल्कि युधिष्ठिर के पिता धर्मराज थे। वह युधिष्ठिर के सामने प्रकट होकर कहते हैं-''तुम निश्चित ही एक न्यायप्रिय, महान व्यक्ति हो। सभी प्राणियों के प्रति तुम्हारा दयाभाव अनुकरणीय है। एक कुत्ता भी तुम्हें अपने भाईयों जैसा ही प्रिय है। तुम्हारा यह कार्य हर युग में सभी मनुष्यों के लिए एक अनुपम उदाहरण रहेगा। अब तुम बिना किसी झिझक के रथ में बैठ सकते हो।''

2. महाराणा प्रताप और चेतक

किंवदती है कि एक चारण प्रताप के पिता चित्तौड़ के तत्कालीन महाराणा उदय सिंह का दो बीजाश्व (घोड़ा) उपहार में देने के लिए लाता है। उनका नाम केतक और चेतक होता है। प्रताप उस समय बस एक किशोर थे। चेतक और प्रताप एक साथ बड़े होते हैं। हल्दी घाटी के युद्ध में चेतक दुश्मन के हाथी की सूढ़ में बंधे हथियार से घायल हो जाता है। उसका खून बह रहा होता है। चेतक को लगता है कि उसके स्वामी की जान को खतरा है तो वह उन्हें किसी सुरक्षित स्थान पर ले जाने की सोचता है। कुछ मुगल सैनिक महाराणा प्रताप का पीछा कर रहे होते हैं। लगातार खून बहते रहने के बावजूद केवल तीन पैरों पर चेतक महाराणा प्रताप को न केवल मीलों दूर ले जाता है बल्कि उफनती हुई नदी भी पार करता है। नदी को पार करने के तुरंत बाद युद्ध में अत्यधिक थकने और उसके चौथे पैर से रक्त बहने के कारण चेतक की मृत्यु हो जाती है। जहां पर चेतक की मृत्यु होती है वहां एक समाधि का निर्माण कराया गया, जिसे हम आज भी देख सकते हैं।

3. भगवान कृष्ण और गायें

भगवान कृष्ण जब बच्चे थे तो गोपाल कहलाते थे। गोपाल का शाब्दिक अर्थ है 'गायों का रक्षक'। गोपाल कृष्ण इतने प्यारे बच्चे थे कि आस-पास की गायें उन्हें अपने बछड़ों से भी ज्यादा प्रेम करती थीं।

गायें संपूर्ण विश्व को सहायता प्रदान करती हैं। उनके दूध से इस भौतिक शरीर को पोषण मिलता है। वहीं घी की आहुति देने से आकाशीय क्षेत्र के निवासियों को भी शक्ति मिलती है।

भगवान कृष्ण श्रीमद् भगवद् गीता के अध्याय-10 के श्लोक 28 में कहते हैं-

''धेनुनम अस्मिं कामधुकधेनुनम''

''गायों में सभी इच्छाओं की पूर्ति करने वाली कामधेनु मैं हूँ।''

2.4 पशुओं की देखभाल

पशुओं के प्रति दया का भाव रखना अच्छा होता है। पालतू पशुओं को प्यार से गले लगाना आसान है। लेकिन आइए हम कुछ ऐसे तरीकों के बारे में बात करें जो आप अभ्यास में ला सकते हैं–

- अपने पालतू जानवर के साथ कुछ समय बिताएं।
- पशुओं के आवास/आश्रय में सेवा करें।
- एक पालतू पशु को गोद लें या भोजन कराएं।
- अपने स्थान को ज्यादा आरामदायक बनाएं (पछियों के घोंसले, नहाने के बर्तन रखकर)।
- ये बात दूसरों तक भी पहुंचाएं। अपना उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उन्हें समझाएं कि पशुओं के प्रति दया का भाव कितना महत्वपूर्ण है।
- पशुओं के प्रति अत्याचार से मुक्त उत्पाद प्रयोग करिए।
- अपने नजदीकी पशुशाला में कुत्ते या बिल्ली को भोजन कराइए या गोद लीजिए।
- सागरों की रक्षा के लिए प्रयास करिए।
- जंगली पशुओं को उनके प्राकृतिक आवास में रहने दीजिए।

पाठगत प्रश्न 2.2

कालम 'क'	कालम 'ख'
1. सूर्य	i. बैल
2. शनि	ii. मगरमच्छ
3. सरस्वती	iii. बाज

4.	लक्ष्मी	iv.	चूहा
5.	शिव	v.	हाथी
6.	विष्णु	vi.	शेर
7.	गणेश	vii.	घोड़ा
8.	इंद्र	viii.	उल्लू
9.	दुर्गा	ix.	हंस
10.	वरुण	x.	कौआ

आपने क्या सीखा

- आस-पास के पशुओं का वर्गीकरण
- इन पशुओं की विशेषताएं
- हमारे जीवन में इन पशुओं की भूमिका
- प्राचीन साहित्य में पशुओं की भूमिका
- पशुओं की देखभाल के तरीके

पाठांत प्रश्न

1. अपने आस-पास पाए जाने वाले पशुओं को उचित उदाहरण देते हुए वर्गीकृत कीजिए।
2. अपने क्षेत्र में पाए जाने वाले 5 पशुओं की सूची बनाते हुए उनका उपयोग बताइए।
3. 10 देवी-देवताओं और उनके वाहनों की सूची बनाइए।
4. पशुओं की देखभाल के 5 तरीके सुझाइए।

उत्तरमाला

2.1

1. संतुलन
2. पालतू
3. दुधारू
4. गधे
5.

2.2

1. vii
2. x
3. ix
4. viii
5. i
6. iii
7. iv
8. v
9. vi
10. ii